Journal of East-West Thought
ISSN: *2168-2259 (online)*
*(https://jetjournal.us/)*
Volume 15, Issue 1, Jan-March – 2025 Special Issue 1
Impact Factor: 7.665, Peer Reviewed and UGC CARE I

# भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की लौह महिला: अरुणा आसफ अली

**डॉ. प्रीति एस. सोनी,** हिंदी विभाग, भाषा अध्ययन प्रशाला एवं अनुसंधान केंद्र, क. ब. चौ. उमवि, जलगांव

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन न केवल हमारे देश को ब्रिटिश शासन से। आजाद करने का प्रयास था बल्कि यह भारतीयों के लिए अपनी पहचान, आत्मसम्मान और स्वतंत्रता प्राप्त करने का एक युगांतरकारी संघर्ष था। यह आंदोलन भारतीय इतिहास का सबसे महत्वपूर्ण अध्याय है, जिसने देश को न केवल राजनीतिक बल्कि सामाजिक सांस्कृतिक और आर्थिक रूप से भी नई दिशा दी। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का सबसे प्रमुख उद्देश्य ब्रिटिश ब्रिटिश शासन से मुक्ति पाना था इस आंदोलन के कारण 15 अगस्त 1947 में भारत को स्वतंत्रता प्राप्त हुई और और देश ने औपनिवेशिक शासन से अपनी संप्रभुता वापस पाई।

स्वतंत्रता आंदोलन केवल राजनीतिक संघर्ष नहीं था बल्कि इसमें सामाजिक सुधारों को भी बढ़ावा दिया गया। महिलाओं की भागीदारी , जाति प्रथा का विरोध, शिक्षा का प्रचार-प्रसार और गरीबों के अधिकारों के लिए लड़ाई आंदोलन के प्रमुख पहलू थे।

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन किसी एक नायक द्वारा नहीं चलाया गया अपितु सभी भारतवासियों ने अपने स्तर से स्वतंत्रता आंदोलन में नई ऊर्जा का संचार किया। जिसमें मंगल पांडे, रानी लक्ष्मीबाई, महात्मा गांधी,दादाभाई नौरोजी, गोपाल कृष्ण गोखले, लाला लाजपतराय, बाल गंगाधर तिलक, भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद, सुखदेव आदि प्रमुख रहे। परंतु इन जननायक के साथ कई ऐसे भी शहीद हैं जिन्होंने अपने जीवन का सर्वस्व भारत को स्वतंत्र करने के लिए न्योछावर कर दिया । उन शहीदों के नाम तक पूर्ण रूप से भारतीय जनता नहीं जानती है । परंतु यह विषम संग्राम जिस शक्ति, संवरण से जीता जाना संभव हो सका उसके मूल में तप, त्याग, शौर्य, सत्य ,पराक्रम , विश्वबंधुत्व आदि उद्दात गुणों से समृद्ध मातृभूमि के प्रति समर्पित भाव 'भारतीयता' ही केंद्र में था।

"ज्यों-ज्यों जागृति आने लगती, देश जागरुक होने लगा।
नितराष्ट्रीयता बढ़ने लगी, नवशक्ति बल फिर आने लगा।
अपने स्वार्थों की रक्षा में शासन संशकित होने लगा,
देशभक्ति, राजभक्ति, अंतर, निरंतर भारत पानी लगा ।।"[1]

स्वतंत्रता के 75 वर्ष बीतने पर भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन में महिलाओं की उपस्थिति दर्ज की जा रही है-पूछे जाने पर अधिकांश लोग, स्वाधीनता आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी को स्मरण करते हैं। जैसे ब्रिटिश प्रशासन के विरुद्ध गांधी जी के आंदोलनों - नमक सत्याग्रह, सविनय अवज्ञा और असहयोग आंदोलन में हजारों की संख्या में महिलाओं ने अपनी सशक्त भूमिका का निर्वहन किया। इन महिलाओं में 'अरुणा आसफ अली ' का नाम अत्यंत गौरव के साथ स्मरण किया जाता है।

वर्तमान समय में जब हम भारतीय वीरांगना की चर्चा करते हैं तो 'अरुणा आसफ अली' के नाम से कोई भी भारतीय अनभिज्ञ नहीं है। आज हम सभी उनका नाम अत्यंत गौरव और आदर के साथ स्मरण करते हैं। 'अरुणा आसफ अली ' भारतीय स्वतंत्रता संग्राम मैं एक सशक्त वीरांगना के रूप में उभर कर सामने आई। अरुणा जी एक भारतीय शिक्षिका, राजनीतिक कार्यकर्ता और प्रकाशक थी। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में एक सक्रिय भागीदार के रूप में अरुणा जी ने अपना बहुमूल्य योगदान दिया। अरुणा जी का जन्म बंगाली परिवार


Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: *2168-2259 (online)*
*(https://jetjournal.us/)*
Volume 15, Issue 1, Jan-March – 2025 Special Issue 1
Impact Factor: 7.665, Peer Reviewed and UGC CARE I

में जुलाई 16, 1909 ई.को हरियाणा, तत्कालीन पंजाब के 'कालका ' नामक स्थान में हुआ था। इनका परिवार जाति से ब्राह्मण था। वर्ष 1928 में अरुणा जी ने कांग्रेस के नेता ' आसफ अली' से विवाह कर लिया। विवाह उस समय के सामाजिक नियमों के विरुद्ध था, जिससे उनके व्यक्तित्व की साहसिकता और प्रगतिशील सोच का परिचय मिलता है।आसफ अली स्वतंत्रता संग्राम में पूरी तरह से जुड़े हुए थे, इसीलिए विवाह के उपरांत 'अरुणा आसफ अली' भी उनके साथ इस संग्राम में जुड़ गई। अरुणा आसफ अली का नाम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में एक उल्लेखनीय स्थान रखता है। उन्हें 'भारत छोड़ो आंदोलन की नायिका' के रूप में जाना जाता है। उनका जीवन त्याग, संघर्ष और प्रेरणा का प्रतीक था। 'महात्मा गांधी जी अरुणा आसफ अली के विषय में कहते हैं- "अरुणा मेरी पुत्री है भले ही यह विद्रोहिणी हो,या मेरे घर में पैदा ना हुई हो, पर मेरे लिए तो वह हर हालत में पुत्री ही रहेगी। "[2]

विश्व के इतिहास में 20 वीं सदी का अपना एक विशिष्ट स्थान है जो सदैव स्मरणीय रहेगा। यह सदी संघर्ष की है। वर्ष 1857 से वर्ष 1947 तक छोटे और बड़े अनेक संघर्ष और युद्ध लागातार जारी रहे और साथ ही साथ इस शताब्दी में नए और पुराने की कीमतों में जो भी परिवर्तन हुए हैं, वैसे परिवर्तन और पुरावर्तन किसी भी समय में नहीं हुए। हमें इस नए युग के परिवर्तन की नई कीमतों को आंकना होगा। श्रीमती अरुणा आसिफ अली के जीवन के समस्त परिवर्तनों ने हमें उनके समस्त व्यक्तित्व दृष्टि, विचार और भावनाओं को उनमें व्याप्त नारी गौरव का, नित्य नया मूल्यांकन करने के लिए आकर्षित किया है।अरूणा आसफ अली ने अनेक आंदोलनों में भाग लिया और स्वतंत्रता की लड़ाई में पूरी तरह से सक्रिय रही परंतु अरुणा जी का सबसे बड़ा योगदान 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में रहा, 8 अगस्त 1942 को उन्होंने मुंबई के गोवालिया टैंक मैदान(जिसे अब अगस्त क्रांति मैदान कहा जाता है ) मैं तिरंगा फहराया। उनकी साहसिक पहल ने भारतीय जनता को प्रेरित किया और आंदोलन को एक नया जोश दिया। इस घटना के बाद ब्रिटिश सरकार ने उन्हें "अत्यंत खतरनाक नेता " घोषित कर दिया और उनकी गिरफ्तारी के आदेश जारी कर दिए। भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान अरुणा ने भूमिगत होकर ब्रिटिश शासन के खिलाफ गुप्त कार्यों का नेतृत्व किया।उन्होंने गुप्त बैठकें आयोजित कीं और क्रांतिकारियों को संगठित किया।इस दौरान, उन्होंने "इन्कलाब" नामक पत्रिका के माध्यम से आंदोलन को गति दी।अरुणा जी जिस कार्य को हाथ में लेती थी उसे पूरे उत्साह और कर्मठता के साथ पूर्ण करती थी। अरुणा जी के लिए व्यर्थ जैसा कुछ भी नहीं था। 1930 में नमक सत्याग्रह के समय अरुणा जी ने सार्वजनिक सभाओं को संबोधित किया और जुलूस निकाला। ब्रिटिश सरकार ने अरुणा जी पर अनेक आरोप लगाए और उन्हें 1 वर्ष की जेल की सजा सुनाई। एआईसीसी के 1942 अधिवेशन के बाद सरकार की आंखों में धूल झोंक कर वे भाग निकली और जेल जाने का तोहफा लिए बगैर प्रसिद्ध राष्ट्र सेवीयों की पंक्ति में आ गई। उनकी पहली जेल यात्रा सरल नहीं थी। सरकार ने उन पर राजद्रोह के लिए नहीं बल्कि पीनल कोड की मुकदमे के अनुसार 108 धारा लगाई थी। भले चाल-चलन का वचन देने से इंकार करने पर उन्हें एक साल की सजा हुई। हमारे सर्व सत्ताधारी नौकरशाही की कल्पना शक्ति कुछ कम है ऐसा कौन कह सकेगा।"[3]

गांधी इरविन समझौता के अंतर्गत सभी राजनीतिक बंधिया को रिहा कर दिया गया पर अरुणा जी को मुक्त नहीं किया गया परंतु जब उनके पक्ष में एक जन-आंदोलन हुआ तब ब्रिटिश सरकार को उन्हें छोड़ना पड़ा। अरुणा जी को वर्ष 1932 में पुनः बंदी बना लिया गया और तिहाड़ जेल में रखा गया। तिहाड़ जेल में राजनीतिक कैदियों के साथ हो रहे बुरे व्यवहार के विरोध में अरुणा आसफ अली ने भी भूख हड़ताल की। उनके विरोध के कारण ही जेल के हालात में कुछ सुधार हुआ। तत्पश्चात अरुणा आसफ अली ने 10 वर्ष तक


Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: *2168-2259 (online)*
*(https://jetjournal.us/)*
Volume 15, Issue 1, Jan-March – 2025 Special Issue 1
Impact Factor: 7.665, Peer Reviewed and UGC CARE I

राजनीतिक संग्राम में विशेष रूप से रचनात्मक हिस्सा नहीं लिया सिर्फ अखिल भारतीय स्त्री मंडल को लेकर ही कार्य प्रवृत्ति की। यह वर्ष पर्याप्त पढ़ने अभ्यास और मनन करने के ही थे, जिससे वे आगामी संग्राम के लिए तैयार हो सके।अरुण जी बहुत गंभीर दृष्टि और नजदीक से कांग्रेसी कर्मियों को भी देख रही थी।

'वे भी पंडित जवाहरलाल नेहरू की तरह कई बार कांग्रेस के उच्च सिद्धांतों को एक और रख देती हैं। वे कहती है कि हम कांग्रेस के मार्ग में बाधक बनना नहीं चाहते, पर मुंबई और कोलकाता में घटी हुई ताजी घटनाओं के कारण जब हमारे स्वाभिमान का प्रश्न सामने आता है, तब मैं यही ठीक समझती हूं कि उसे वक्त हम उन उच्च सिद्धांतों को उज्जवल भविष्य के लिए छोड़ दें।"[4]

इस तरह का वक्तव्य या सोच ही अदम्य साहस का प्रतीक है। अरुणा जी ने अपनी बुद्धि कौशल और साहस के बल पर भारतीय संग्राम में सदैव ही अपनी भूमिका का निर्वहन किया है। अरुणा जी महिला थी जिनका हृदय कोमल और मृदु होते हुए भी वह वक्त आने पर पाषाण से अधिक कठोर और उग्र भी बन सकती थी। किसी भी सिद्धांत ने आज तक उन्हें अधीर बनाकर न झुकाया और ना उनके मन की स्वतंत्रता की लौ को बुझने दिया, उन पर जेल में अत्याचार हुए, परंतु उनकी शक्ति और साहस को कोई भी कम नहीं कर सका।

भारतीय जनता वर्ष 1942 की जनक्रांति को भूल नहीं सकती है। वर्ष1942 में अरुणा आसफ अली ने अपने पति आसिफ अली के साथ मुंबई के कांग्रेस अधिवेशन में भाग लिया जहां पर 8 अगस्त को ऐतिहासिक ' अंग्रेजों भारत छोड़ो ' प्रस्ताव पारित हुआ। प्रस्ताव पारित होने के एक दिन पश्चात जब कांग्रेस के नेताओं को गिरफ्तार किया गया तब अरुणा जी ने मुंबई के गोलियां टैंक मैदान में ध्वजारोहण कर आंदोलन की अध्यक्षता की । अरुणा जी ने इस आंदोलन में एक नया जोश और उत्साह भरा था। वह भारत छोड़ो आंदोलन में पूर्ण रूप से सक्रिय हो गई और गिरफ्तारी से बचने के लिए भूमिगत हो गई। इस अधिवेशन के बाद अरुणा जी ने दिल्ली में एक भाषण दिया और उनके उद्बोधन ने जन-जन के मन को भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में अपनी आहुति देने के लिए प्रेरित किया। उनका कथन है- 'लोग 1942 की जनक्रांति को भूले नहीं है। एक दिन ऐसा आएगा की हम दिल्ली के सेक्रेटरिएट पर अपना झंडा फहराएंगे, और अपने हाथों से ब्रिटिश नौकरशाही की व्यवस्था नेस्तनाबूद कर देंगे। पर हमारी उस रास्ते में बहुत सी बाधाएं आएंगी। ब्रिटिश वायसराय और ब्रिटिश सेना हमारे रास्ते की पहली अड़चनें होगी। पर हम हिंदू,मुस्लिमों को एक होकर मजदूर और किसान का राज स्थापित करना होगा।'।[5]

अंत में अरुणा जी ने विद्यार्थियों से ब्रिटिश माल अर्थात सामान के बहिष्कार का आंदोलन करने का अनुरोध किया और कहा कि बंगाल के अकाल का जिम्मेदार ब्रिटिश शासन तंत्र ही है। अगर भारत में ब्रिटिश माल आएगा तो भारतीय उद्योग और पूंजी की स्थिति बहुत ही दयनीय और खराब हो जाएगी। दिल्ली के बाद अरुणा जी नागपुर गई वहां भी जनमानस ने अरुणा जी को हृदय से स्वीकार किया। नागपुर कांग्रेस कमेटी द्वारा आयोजित नागपुर के नागरिकों की एक विराट जनसभा में सभापति के स्थान से श्रीमती अरुणा जी के स्वागत में श्री दीनदयाल गुप्त ने उनके यशस्वी जीवन के वर्णन में कहां की- " सन 1942 की अगस्त क्रांति में नागपुर की जनता ने जितना आत्म बलिदान किया है, हम उन्हें अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। श्री गुप्त ने यह भी कहा कि आने वाले स्वतंत्रता संग्राम में भी नागपुर की जनता श्रीमती अरुणा के पद चिन्हों पर ही चलेगी।"[6]

अरुणा जी की वाणी हुंकार की प्रतिध्वनि थी। उनके मानसिक विश्वास की प्रतिध्वनि उनके निडर, दृढ़ और क्रांतिकारी स्वभाव पर भी स्पष्ट परिलक्षित है। नागपुर के बाद वर्धा के नागरिकों ने श्रीमती अरुणा जी का


Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: *2168-2259 (online)*
*(https://jetjournal.us/)*
Volume 15, Issue 1, Jan-March – 2025 Special Issue 1
Impact Factor: 7.665, Peer Reviewed and UGC CARE I

स्वागत किया। तब वहां भी उन्होंने उसे विराट जन समूह को संबोधित किया। जिस सभा को वायसराय ने क्रांति और आंदोलन की आलोचना करके उस सभा को सामूहिक हिंसा का रूप दिया था। अरुणा जी ने सदैव लोगों में चेतना भरने का प्रयास किया वह कहती हैं -"हमारे सामने दो रास्ते खुले हुए हैं अकाल के कारण मौत के मुंह में जाना, या ब्रिटिश सरकार के हाथों गुलामी में सड़ना, यह दो बातें हैं। इन दोनों में से हमें किसी एक को पसंद करना है। मैं तो आपको लड़के-लड़ते वीरता पूर्वक मौत से मिलने का ही आग्रह करूंगी, दुश्मन के हाथों पतित होने के लिए नहीं कहूंगी।"[7]

अरुणा आसफ अली ने अपने भाषणों , उद्बोधनों से भारत की जनता में बार-बार प्राण फूंकने का प्रयास किया। वर्धा में जनता को संबोधित करते हुए उन्होंने इस बार अर्थात स्वतंत्रता संग्राम के अंतिम संघर्ष का संकेत करते हुए कहा, सरकार के जुल्म हमारे जोश को रोक नहीं सके। हमारी भीतरी आग इस वक्त जो भी कुछ धीमी है फिर भी समय आने पर वह फिर धधक उठेगी।

वीरांगना अरुणा जी के भाषणों और जीवन वृत्त का अध्ययन करने के पश्चात यह बात स्पष्ट हो जाती है कि उनका राजनीतिक जीवन सिर्फ महात्मा गांधी जी के संघर्ष का फल नहीं है। पहले जिन महिलाओं ने भारत देश के अहिंसक आंदोलन में भाग लिया था उनमें से श्रीमती सरोजिनी नायडू, श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित, श्रीमती कमला देवी चट्टोपाध्याय आदि अनेक महिलाओं की अनुभूतियों व प्रेरणाओं की तरह हुआ है। अरुणा जी देश की स्वतंत्रता के बाद भी राजनीति में हिस्सा लेती रही। वर्ष 1947 ईस्वी में अरुणा जी दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी की अध्यक्षा निर्वाचित हुई और दिल्ली में कांग्रेस संगठन को सुदृढ़ किया । वर्ष 1958 में अरुणा जी दिल्ली की पहली महिला मेयर बनी। वर्ष 1960 में अरुणा जी ने सफलतापूर्वक मीडिया पब्लिशिंग हाउस की स्थापना की।

अरुणा जी के स्वतंत्रता संग्राम में अपूर्व योगदान और कार्य को देखते हुए वर्ष 1992 में प्रतिष्ठित पद्म विभूषण और वर्ष 1997 में उन्हें भारत रत्न पुरस्कार से सम्मानित किया गया। अरुणा जी ने स्वतंत्रता आंदोलन में भारत के प्रत्येक क्षेत्र से महिलाओं को संगठित करने का भी सफल प्रयास किया। अंत में अरुणा ने भारत की स्वतंत्रता या परतंत्रता का आखिरी फैसला कर देने के लिए नए संघर्ष का क्रांतिकारी संदेश सुनाया और इसके साथ ही संघर्ष के लिए स्त्रियों का एक मजबूत संगठन बनाने की घोषणा की, उस घोषणा के मूल में स्त्रियों के लिए एक खास संदेश यह था कि उस संगठन में सम्मिलित होकर बहनें तलवार की जगह चरखे को अपनाएं और गांव-गांव में आजादी का संदेश सुनाएं।"[8]

सचमुच ही अरुणा आसफ अली नूतन योगी की नारी शक्ति की मूर्ति मान प्रतीक है। अरुणा जी ने आजीवन विदेशी शासन के विरुद्ध विद्रोह करने का पाठ हम भारतीयों को पढाया। वर्ष 1996 जुलाई 29 में अरुणा आसिफ अली का दिल्ली में निधन हो गया। परंतु जब भी भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की बात उठेगी तो अरुणा आसफ अली के योगदान को सदैव ही स्मरण किया जाएगा। अरुणा जी की वीरांगना छवि को स्मरण करते हुए दगो लाड दर्शन जी लिखते हैं-

"पराधीनता की बेड़ी को।
झटक- झटक कर तोड़ रही।।
एक ज्वाला बनकर तुम प्रगटी।
चिंगारी जिसकी फूट रही।
संदेश लिए ' नारी मन' का ।


Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: *2168-2259 (online)*
*(https://jetjournal.us/)*
Volume 15, Issue 1, Jan-March – 2025 Special Issue 1
Impact Factor: 7.665, Peer Reviewed and UGC CARE I

एकता को अपनाया तुमने।
हिंदू- मुस्लिम का भेद मिटा।
रूढ़ियों को ठुकराया तुमने।।
तब वही मार्ग तुमने पकड़ा।
अज्ञात बनी भारत ज्वाला।।
भीतर ही भीतर सुलग-सुलग।
उभराया हिंद को रणवाला।।
आजादी का वह नया मोल।
बतलाया तुमने भारत को।।
रण ही देगा आजादी को।
दिखलाया तुमने भारत को।।"[9]

**संदर्भ सूची**

1. भारतीय स्वतंत्रता संग्राम, सूर्यनारायण पांडेय, पृष्ठ क्रं. 38
2. वीरांगना अरुणा आसफ अली - संपादक सुरेश गांधी, अनुवादक-द गो लाड 'दर्शन'- भूमिका
3. वही पृष्ठ क्रमांक - 15
4. वही पृष्ठ क्रमांक - 16
5. वही पृष्ठ क्रमांक - 20
6. वही पृष्ठ क्रमांक - 21
7. वही पृष्ठ क्रमांक - 23
8. वही पृष्ठ क्रमांक - 29
9. वीरांगना अरुणाआसफ अली - संपादक सुरेश गांधी, अनुवादक-द गो लाड 'दर्शन'- भूमिका-17


Copyright © | JET Network, All Rights Reserved